फ्युरिकिया के अद्भुत अंडे

इटली की लोककथा

फ्युरिकिया के अद्भुत अंडे

इटली की लोककथा

कहानी के विषय में

रेनेसंस काल में इटली के कुलीन वर्ग के लोग अकसर जादूगरनियों की, जिन्हें वहां की भाषा में स्त्रेगा बुलाते थे, सेवायें लिया करते थे. इस कारण कई बार गरीब विधवायें आरामदायक जीवन जीने के लिए जादू और वशीकरण की कला का सहारा लेने लगी थीं. लोगों और पशुओं की बीमारियों का इलाज करने के लिए या ज़मीन की उपज बढ़ाने के लिए जादूगरनियाँ रहस्यमय औषधियां व जंत्र-मंत्र बेचती थीं. एक स्त्रेगा को विरासत में बहुत सारी लोककथाएँ भी मिलती थीं.

यह कहानी एक ऐसी ही दयालु जादूगरनी की है जो पन्द्रवीं शताब्दी के आरंभ में फ्लोरेंस नगर में रहती थी.
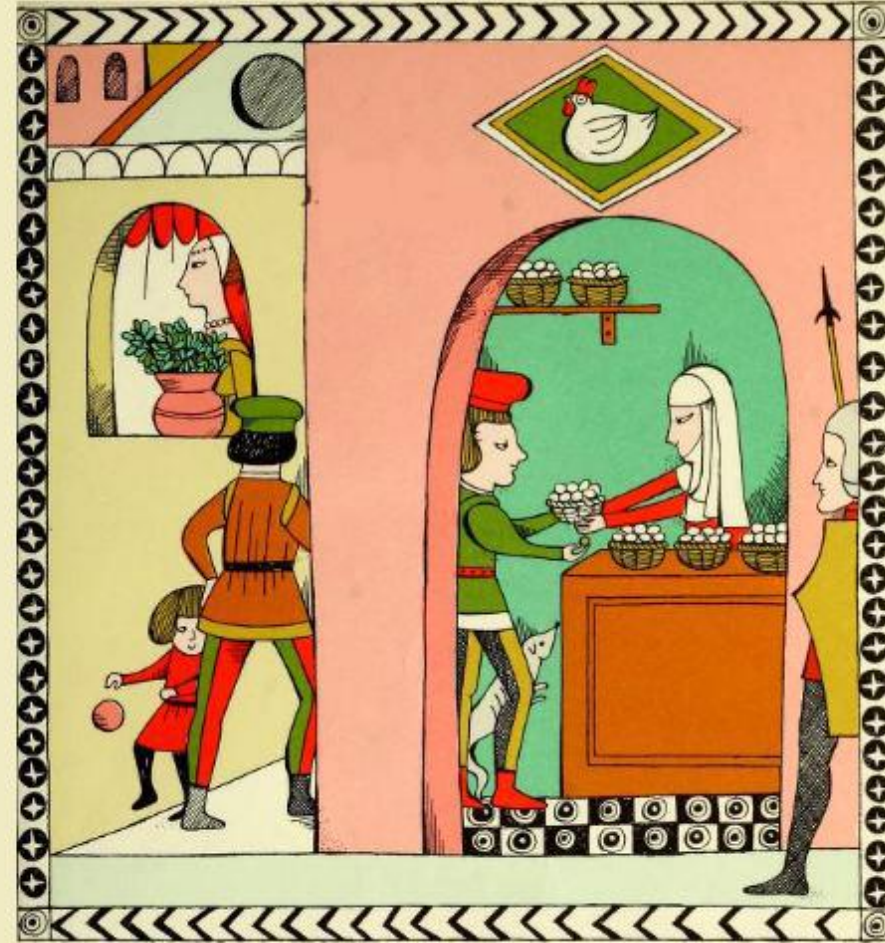
बहुत वर्ष पहले फ्लोरेंस में एक छोटी सी दूकान थी जहाँ एक बूढ़ी औरत, जिसका नाम फ्युरिकिया था, अंडे बेचा करती थी.

और कैसे अंडे थे वह! यद्‌यपि वह साधारण अंडों जैसे दिखते थे - और साधारण अंडों से छोटे भी थे -

जो कोई भी वह अंडे खाता था उसके
साथ कुछ अद्भुत घटने लगता था.

बीमार बच्चे स्वस्थ
और तगड़े हो जाते थे;

साधारण लड़कियाँ सुंदर बन जाती थीं;
डरपोक लड़के निडर बन जाते थे;
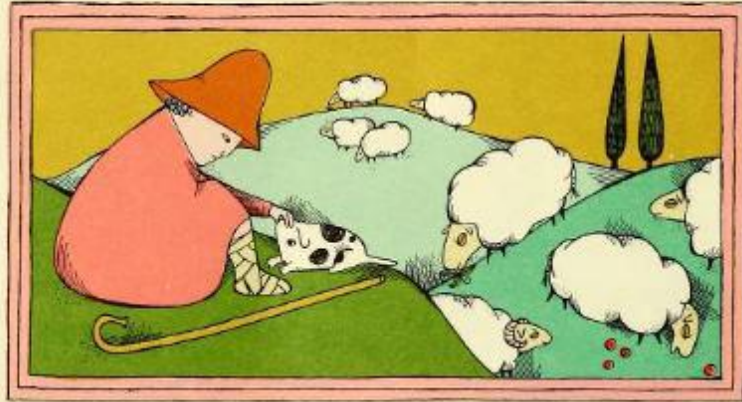
किसानों के पेड़ों पर सब अंजीर अच्छे से पक जाते थे;
यात्रियों को रास्ते में लुटेरे न लूटते थे;

गड़ेरिये अपनी कोई भेड़ न खोते थे;

और कुछ मूर्ख लोग तो
बुद्धिमान बन गये थे –
बस फ्युरिकिया के अद्भुत
अंडे खाकर!
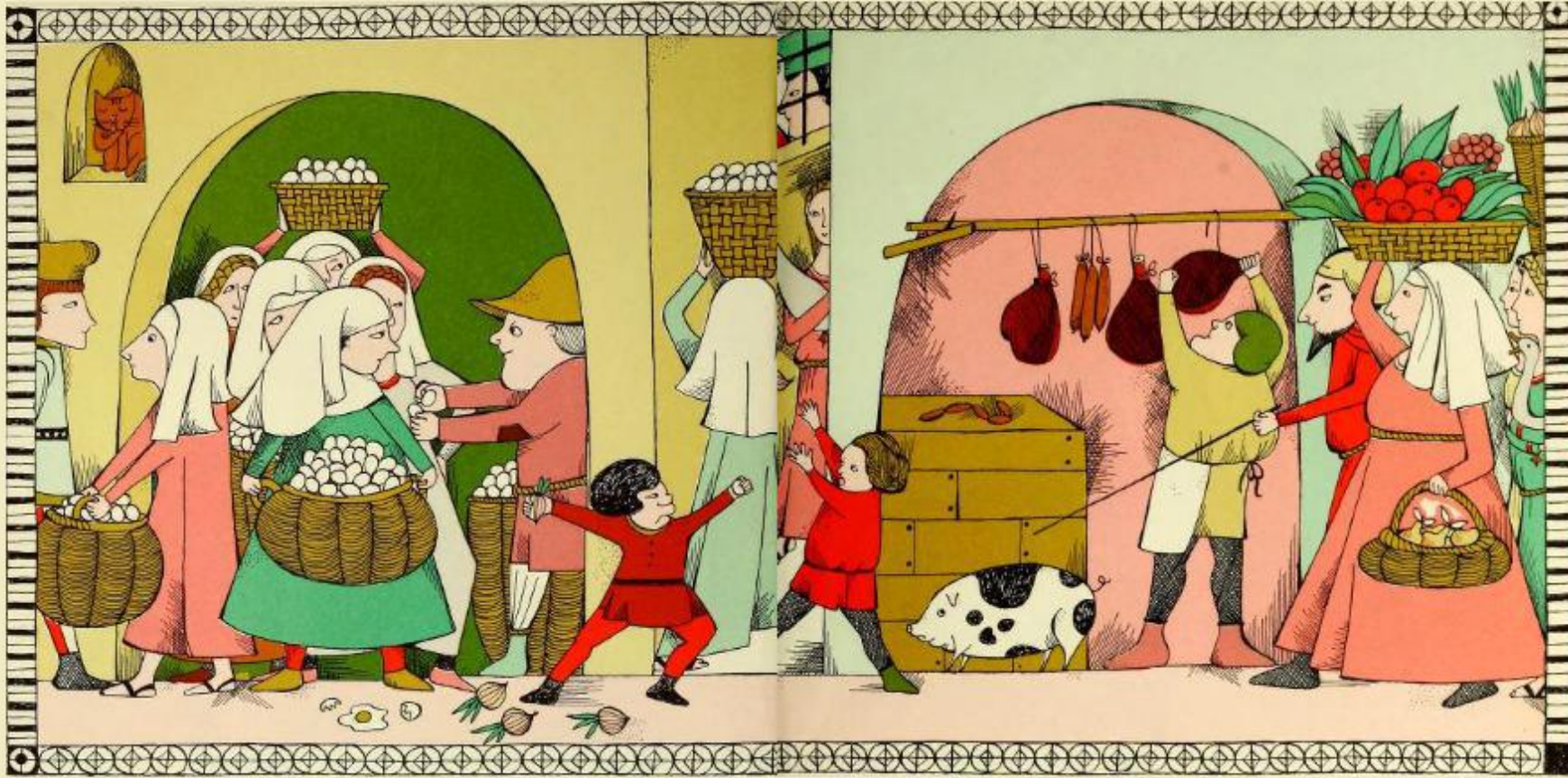
लेकिन फ्युरिकिया के अंडों के बारे में एक अजीब बात भी थी. किसी व्यक्ति ने आजतक उसे बाज़ार में किसी किसान से अंडे खरीदते ने देखा था, जैसा की नगर की अन्य अंडे बेचने वाली औरतें करती थीं. फिर भी उसके पास सदा दूसरों से अधिक अंडे होते थे; तब भी जब मुर्गियाँ अंडे देना बंद कर देती थीं और बाज़ार में अंडों की किल्लत होती थी.

लेकिन फ्युरिकिया के पास सदा इतने अंडे होते थे कि अपने सब ग्राहकों को वह अंडे बेच सकती थी. सब लोग सहमत थे कि वह अवश्य ही एक जादूगरनी थी, जो इतने अद्भुत अंडे वह कहीं से भी बना लेती थी - लेकिन चूँकि उसके जादू से लोगों का भला ही हो रहा था, सब उसे चाहते थे और अंडे बेचकर वह खूब संपन्न हो गयी थी.

तो तात्पर्य यह है की सब उसे पसंद करते थे, सिवाय एक के. उसकी एक पड़ोसिन थी जिसका नाम था, मैड्डलेना. वह नीच और स्वार्थी तो थी ही, वह सुंदर भी न थी. वह गरीब नहीं थी, लेकिन अमीर भी न थी. वह फ्युरिकिया के अच्छे भाग्य से जलती थी और धीरे-धीरे उससे घृणा करने लगी थी. कारण यह था:

जब मैड्डलेना ने देखा कि फ्युरिकिया के अंडे खाने वालों के साथ कुछ अद्भुत घट रहा था,

तब उसने सोचा कि अगर वह फ्युरिकिया का एक अंडा खाये तो निस्संदेह वह भी सुंदर और धनी बन जायेगी. लेकिन जब उसने एक दर्जन अंडे खरीदने चाहे तो फ्युरिकिया ने कहा :

“अपने पैसे अपने पास ही रखो, मैड्डलेना. मुझे खेद से कहना पड़ रहा है कि इन अंडों से तुम्हें कोई लाभ न होगा. यह अंडे उन्हीं लोगों की सहायता करते हैं जो दयालु हैं. अन्य लोगों के लिये तो यह साधारण अंडों जैसे ही हैं. सत्य तो यह है कि साधारण अंडों से यह छोटे हैं और कम स्वादिष्ट हैं!”

लेकिन मैड्डलेना हठ करने लगी और हारकर फ्युरिकिया ने एक दर्जन अंडे उसे दे दिये. हर दिन मैड्डलेना ने एक अंडा खाया. उसने उन्हें खूब उबाल कर खाया; उसने अंडों का ऑमलेट बना कर खाया- लेकिन तब भी, दो सप्ताह के बाद, न तो वह सुंदर बनी और न ही धनी. कुछ भी नहीं बदला था, सिवाय इसके कि अब वह पहले से अधिक गुस्सैल हो गयी थी. उसने सोचा कि फ्युरिकिया ने अवश्य ही उसके साथ छल किया था. अब वह उससे और भी घृणा करने लगी. उसने निश्चय किया कि वह फ्युरिकिया के अंडों का रहस्य जान कर ही रहेगी और उसे चुरा लेगी.

अंडो का रहस्य यह था:

कई वर्ष पहले उदारहृदय फ्युरिकिया ने एक छोटी काली और सफ़ेद मुर्गी की जान बचाई थी. जैसे ही एक कसाई उसे मार कर सूप बनाने के लिए तैयार करने वाला था, फ्युरिकिया ने उसे कटने से बचा लिया.

यह एक जादुई मुर्गी थी. उसे बस एक ख़ास तरह का शोरबा पिलाना पड़ता था और हर रात वह दर्जनों अद्भुत अंडे देती थी. मुर्गी ने ही फ्युरिकिया को जादुई शोरबा बनाना सिखाया था और फ्युरिकिया ने हर बार लग्न और प्यार से नन्हीं मुर्गी के लिये वह शोरबा पकाया था. धीरे-धीरे मुर्गी की शोभा बढ़ने लगी थी और बढ़ती गई थी. फिर एक दिन ऐसा आया कि उसके पंख गगन के तारों समान झिलमिलाने लगे थे. उसकी चोंच और आँखें सूर्य समान सुनहरी और चमकदार हो गई थीं.

लेकिन सारा दिन मुर्गी फ्युरिकिया की अलमारी के सबसे अँधेरे कोने में छिप कर रहती थी और सिर्फ रात के समय, जब सारा नगर सो रहा होता था, वह बाहर आती थी. फिर वह अपना जादुई शोरबा पीती थी और ख़ुशी से चिल्लाती, नाचती थी और फिर अंडे देने लगती थी.
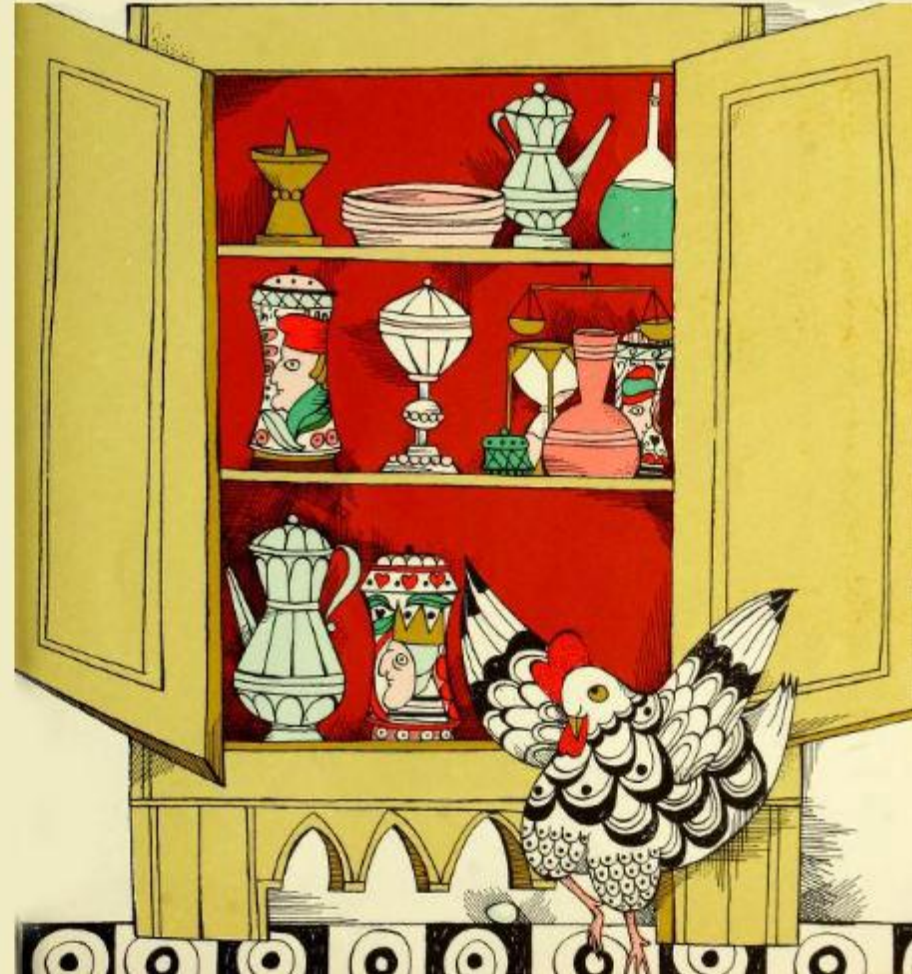
एक दिन फ्युरिकिया ने अपनी दुकान बंद कर दी और पहाड़ियों की ओर चल दी.

वह उस किसान के पास अंडे ले जा रही थी जिसका गधा बीमार था.

चूँकि उसे लगा थी उसके लौटने तक रात हो जायेगी, उसने अपनी मुर्गी के लिए ख़ास शोरबा पहले ही मिला लिया था- थोड़ी सी वाइन; थोड़ा सा नींबू का रस;

जिस पेड़ पर उल्लू का एक बच्चा रहता था उस पेड़ के कुछ जैतून;

पूर्णिमा की रात तोड़ा गया एक अंजीर;

जनवरी में खिले एक गुलाब की सूखी पंखुड़ी;

एक प्याज़; तीन चुटकी सोने के कण; तितली के पंखों से ली गयी ज़रा सी धूल;

इन सब चीज़ों को मिलाते-मिलाते फ्युरिकिया एक छोटा सा गीत भी गाती थी जो मुर्गी ने उसे सिखाया था. लेकिन उस गीत के बोल कोई और समझ न सकता था. जब शोरबा अच्छे से मिल गया तो फ्युरिकिया उसे पकाने के लिये धीमी आग पर रख दिया और दरवाज़े पर बाहर से ताला लगाकर, अपने रास्ते चली गई.

जैसे ही फ्युरिकिया घूम कर मोड़ के आगे गई,
मैड्डलेना खिड़की के रास्ते भीतर आ गई.

आखिरकार फ्युरिकिया का रहस्य जानने
का अवसर उसे मिल ही गया था.

जब वह अंडों की दूकान के अंदर आई, उसे वहाँ कोई अंडे दिखाई न दिये (क्योंकि उस दिन वह दूकान बंद थी). उसे सिर्फ धीमी आंच पर पकता शोरबा दिखाई दिया. उसकी खुशबू कितनी अच्छी थी! वह कितना स्वादिष्ट लग रहा था! और मैड्डलेना ने थोड़ा सा शोरबा पी लिया. शोरबा इतना स्वादिष्ट और आश्चर्यजनक था कि मैड्डलेना को लगा कि उसने आजतक ऐसी कोई चीज़ न चखी थी. उसे विश्वास हो गया कि इसी शोरबे से फ्युरिकिया के ग्राहकों के जीवन में शुभ घटनायें घटती थीं. बस ऐसा सोच कर वह सारा शोरबा पी बैठी और जिस रास्ते से भीतर आई थी उसी रास्ते से लौट गई. अलमारी के अंदर बैठी मुर्गी दरवाज़े की दरार से सब देख रही थी; वह उसकी मूर्खता पर हंसने लगी.

बाद में जैसी ही मैड्डलेना ने आइने में देखा तो वह समझ गयी कि उसने सही काम किया था! वह थोड़ा अलग दिखाई दे रही थी - उसकी आँखें चमक रही थीं, इतनी शानदार वह पहले कभी न थीं-और वह थोड़ा अलग दिख रही थी, हालांकि वह समझ न पाई कि उसमें क्या बदलाव आया था.

फ्युरिकिया को उतनी देर न हुई जितना उसने सोचा था और वह घर लौट आयी. किसान का गधा जल्दी ही स्वस्थ हो गया था - वास्तव में तो एक अंडा खाते ही वह ठीक हो गया था.
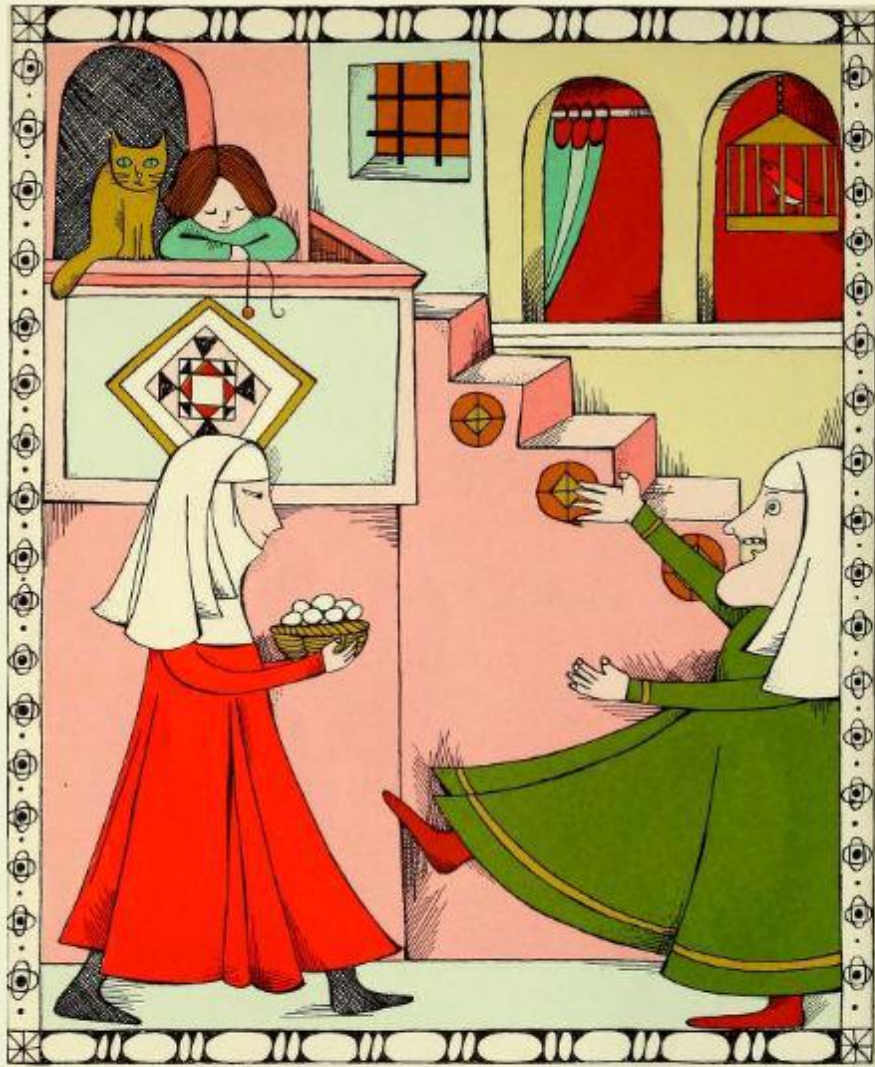
जब मैड्डलेना ने फ्युरिकिया को लौटते हुए देखा तो अपनी जीत के बारे में बताने के लिये वह झटपट दौड़ती हुई उसके पास आई.

लेकिन जैसे ही वह उससे बात करने लगी तो उसके मुंह से बस एक ही आवाज़ निकली:

"कुट- कुट!............कुट- कुट!......
कुट, कुट, कुट!"

और फिर मैड्डलेना ने देखा कि वह छोटी हो गई थी- बहुत, बहुत छोटी.....एक मुर्गी जितनी छोटी....वास्तव में वह एक मुर्गी बन गई थी, यद्यपि कि वह उतनी सुंदर न थी जितनी सुंदर फ्युरिकिया की मुर्गी थी.
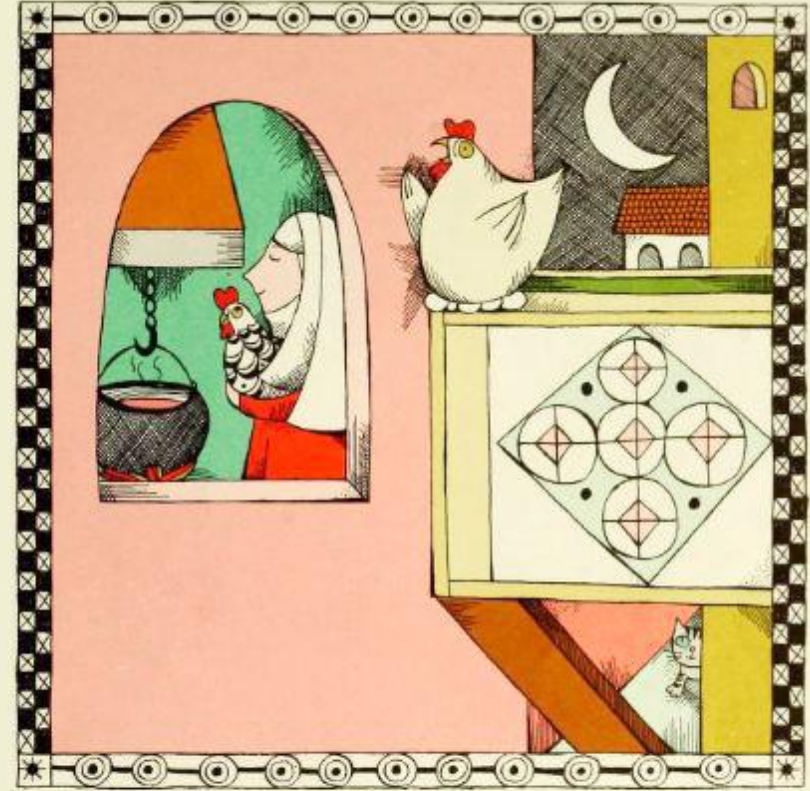
और दुःख से कहना पड़ता है कि उस दिन के बाद जो अंडे उसने दिए वह उतने अद्भुत न थे जितने अद्भुत फ्युरिकिया की मुर्गी के होते थे- हालांकि वह अजीब थे, क्योंकि उन अंडों से जो बाहर आये वह चूज़े न थे.....

लेकिन चूहे थे, और सब चूहे भाग गये!

समाप्त